बाबा मुक्तानन्द के जन्मदिवस महोत्सव २०२० के उपलक्ष्य में उनके साथ एक प्रसंग

मन्त्र—बाबा जी का दिव्य आई. डी. कार्ड

फ़रवरी १९७५ में, बाबा जी कैलिफ़ोर्निया स्थित सैन डीएगो शहर आए। वे वहाँ बहुत अच्छी जगह पर ठहरे थे और हर सुबह अपनी जपमाला फेरते हुए सड़क पर एक ओर से दूसरी ओर, एक ओर से दुसरी ओर, एक ओर से दुसरी ओर टहला करते।

एक सुबह, जब मैं और कुछ लोग बाबा जी के साथ टहल रहे थे तब पुलिस की एक गाड़ी आकर हमारे बगल में रुकी, फिर दूसरी आई और फिर एक और पुलिसवाला मोटरसाइकल पर आया। मैंने देखा कि बाबा जी उनकी ओर देख रहे हैं। बाबा जी कुछ और क़दम चले; अपनी उँगलियों से वे जपमाला फेरते रहे।

एक पुलिसवाला गाड़ी से बाहर निकला। बाबा जी सीधे उस पुलिसवाले के पास गए और उससे कहा, "मैं एक अमरीकी पुलिसवाले से मिलना चाहता था! तुम मुझसे क्या पूछना चाहते हो?"

पुलिसवाले ने बाबा जी से पूछा, "क्या आपके पास अपना आई. डी. कार्ड [पहचान पत्र] है?"

बाबा जी ने कहा, "हाँ है!" और उन्होंने उसे मन्त्रकार्ड पकड़ाया। हम आश्चर्यचकित थे—हम नहीं जानते थे कि बाबा जी अपनी जेब में मन्त्रकार्ड रखते हैं! पुलिसवाले ने मन्त्रकार्ड की एक तरफ़ बाबा जी की फ़ोटो देखी। "इसे पलटो," बाबा जी ने उससे कहा। "दूसरी तरफ़ सब कुछ समझाया गया है।"

मैंने देखा कि पुलिसवाला अचम्भित रह गया, उसने बताया, "हमें फ़ोन आया था। पास रहने वाली एक महिला को यह पता नहीं था कि आप सड़क पर बार-बार एक ओर से दूसरी ओर क्यों टहल रहे हैं। वे चाहती थीं कि हम आपकी जाँच करें, तो हमने की . . . और आप अच्छे हैं।"

मैंने बाबा जी को कहते हुए सुना, "तुम बहुत अच्छे हो। तुम इतना अच्छा काम कर रहे हो। इसी तरह अच्छा काम करते रहो। बहुत अच्छा!"

जब पुलिसवाले जा रहे थे, तो बाबा जी ने उनकी ओर देखकर हाथ हिलाया और कहा, “मुझसे मिलने फिर आना, आकर ध्यान-शिविर लेना!”

बाबा जी इतने मिलनसार थे, इतने सच्चे और सहज थे। जाते समय, पुलिसवालों के चेहरे पर सुन्दर, उज्ज्वल मुस्कान थी।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।